<u>राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भाजपा को नहीं चलाता, बल्कि भाजपा ही भाजपा को चलाती है - श्री मदन दास</u>

10 अगस्त 2008 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह–सरकार्यवाह श्री मदनदास देवी इंडियन एक्सप्रेस में आमंत्रित किए गए जहां उन्होंने वहां के संपादक और अन्य संपादकीय सहयोगियों के प्रश्नों के उत्तर दिए यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयोजन होता है, जिसमें देश के वरिष्ठ और शिखरस्थ नेता इंडियन एक्सप्रेस के वरिष्ठ संपादकों और संवाददाताओं के साथ चर्चा हेतु आमंत्रित किये जाते हैं और चर्चा का अंत भोजन के साथ होता है। इस चर्चा को अगले सप्ताह इंडियन एक्सप्रेस में छापा गया। इसके मुख्य अंशों का अनुवाद यहां प्रस्तुत है।

वंदिता मिश्रा– जम्मू के संदर्भ में आप इस तथ्य पर क्या टिप्पणी करना चाहेंगे कि पहली बार कांग्रेस भाजपा तथा अन्य दलों के पास राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे लेकर पहुँच रही है?

मदनदास देवी– पहले तो मैं यह कहना चाहूँगा कि जम्मू का आंदोलन राजनैतिक आंदोलन नहीं है। यह वहां का जनांदोलन है। प्रत्येक व्यक्ति ने बंद का समर्थन किया है। इसके अलावा जम्मू के अधिकांश विधायक कांग्रेस से हैं लेकिन यह जनसहभागिता की तीव्रता ही थी जिसने प्रशासन को बातचीत की मेज पर आने के लिए विवश कर दिया।

वंदिता मिश्रा– क्या आप यह नहीं देखते कि यह दो महत्वपूर्ण राजनीतिक दलों के बीच संवाद की व्यापक प्रक्रिया का प्रारंभ है?

मदनदास देवी – क्यों नहीं । हम इससे तो ज्यादा एक–दूसरे से अलग नहीं हो सकते थे।

कुमी कपूर– क्या आप सोच सकते हैं कि जम्मू में जो एक ठहराव आ गया है, उसका समाधान सर्वदलीय समिति कर सकती है?

मदनदास देवी यह उन सभी लोगों की जिम्मेदारी है जो जम्मू कश्मीर की सुरक्षा देखते हैं, हमें इस समस्या का समाधान सद्भाव से ही निकालना है।

जे.पी. यादव– प्रधानमंत्री ने कहा है कि जिस प्रकार से जम्मू में मुद्दा उभर रहा है यह केवल देश के दुश्मनों को ही सहायता देगा?

मदनदास देवी– यह परिस्थिति देश के दुश्मनों के द्वारा तैयार की गई है हुर्रियत कांफ्रेंस ने सीमा पार के लोगों की मदद से इस परिस्थिति को पैदा किया है। और पीडीपी ने उनके साथ हाथ मिलाकर सरकार को गिराया है।

जे.पी. यादव– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा पर आरोप लगे हैं कि वे लोगों के गुस्से को भड़का रहे हैं।

मदनदास देवी– केवल भाजपा या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही नहीं बल्कि पार्टीगत दायरों से ऊपर उठते हुए हर व्यक्ति इस आंदोलन से जुड़ गया है। इसलिए यह किसी एक पार्टी का मुद्दा रह ही नहीं गया है।

मनीष छिब्बर– क्या आप सोचते हैं कि इससे जम्मू को अलग राज्य देने की मांग को शक्ति मिलेगी? जो भी लोग इस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं वे सभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा समर्थित संगठनों के अंग रहे हैं।

मदनदास देवी– जम्मू के प्रति भेदभाव हमेशा वहां के लोगों के मन में एक चुभन पैदा करता रहा है। उनकी अनेक मांगें हैं जो वे पूरा करना चाहते हैं।

डी.के. सिंह– अमरनाथ मुद्दा राम जन्मभूमि आंदोलन से कितना भिन्न है?

मदनदास देवी– भावनाएं समान हैं जम्मू के मामले में अमरनाथ श्राइन बोर्ड को कुछ निर्माण के लिए लीज दी गई थी ताकि यात्रियों को सुविधाएं मिल सकें। राम जन्मभूमि के आंदोलन का राम मंदिर मुद्दा इस राष्ट्र की बहुत पुरानी पीड़ा है। यह नष्ट कर दिया गया था और इसका राम जन्मभूमि के रूप में पुनः निर्माण किया जाना चाहिए। तथ्य यह है कि जनता ऐसे मुद्दों पर उद्विग्न होती है। यही इन दोनों आंदोलनों के बीच में साम्य कहा जा सकता है।

डी.के. सिंह– क्या आप इस आंदोलन को जम्मू की परिधि के बाहर ले जाने के लिए तैयार हैं?

मदनदास देवी– यह तो एक स्वाभाविक परिणाम है किसी ने कुछ किया तो उसकी एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया के समान।

डी.के. सिंह– आपने कहा कि हुर्रियत कांफ्रेंस भारत की शत्रु है, एक प्रकार से आपने यह संकेत नहीं दिया कि एनडीए सरकार को भी हुर्रियत के साथ संवाद में शामिल नहीं होना चाहिए था?

मदनदास देवी– इस प्रश्न का विस्तृत उत्तर अपेक्षित है। लेकिन हम किसी के साथ भी संवाद कर सकते हैं समस्या सुलझाने के लिए संवाद एक प्रक्रिया होती है और दबाव बनाने के लिए भी। हम चीन के साथ भी संवाद कर रहे हैं हालांकि उसका अभी तक कोई नतीजा नहीं मिला है।

रुचिका तलवार– कुछ दशक पहले तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पंजाब में काफी बहुत मजबूत स्थिति रहा करती थी। लोग सुबह शाखा जाया करते थे लेकिन आज ऐसा नहीं दिखता है। क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति सहानुभूति रखने वाले पंजाबी लोग उससे दूर हो गए हैं?

मदनदास देवी– अगर ऐसा होता तो पंजाब में सर्वाधिक संख्या में हमारे समर्थक विधायक कैसे होते। कहीं भी हमारे प्रति समर्थन कमजोर होने के संकेत नहीं हैं। शाखाओं पर जाना एक अलग मामला है शाखा एक निस्वार्थ कार्य है एक उच्च स्तर की प्रेरणा चाहिए होती है जो चुनाव जीतने की प्रेरणा से भिन्न होती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में लोगों को अपने कार्य और राष्ट्र के कर्त्तव्य के संदर्भ में जागृत किया जाता है और यह सब जगह चल रहा है। शाखाओं का कार्य तो अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी फैला है।

रुचिका तलवार– आपके प्रति सहानुभूति और समर्थन रखने वाले ज्यादातर लोग पंजाब के प्रभावशाली हिन्दू परिवार थे, वे आर्थिक दृष्टि से कमजोर नहीं कहे जा सकते।

मदनदास देवी– वह पहले था अब आप पाएंगे कि शाखाएं झुग्गी–झोपड़ी, बस्तियों और पिछड़े इलाकों में चल रही हैं, शहरों में साप्ताहिक बैठकें और साइबर शाखाएं भी चलने लगी हैं उदाहरण के लिए बंगलौर में 40 साइबर शाखाएं हैं जिसके 800 सदस्य हैं । यह काम करने का एक अलग तरीका उभरकर आया है।

उन्नी राजन शंकर – भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बीच संबंध किस प्रकार से काम करते हैं ?

मदनदास देवी– हमारे स्वयंसेवक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने निकले हैं। कुछ स्वयंसेवकों को अन्य संगठनों द्वारा काम करने के लिए चाहा गया था। प्रत्येक संगठन स्वयं में स्वयत्तशासी होता है। वे किसी भी कार्य के लिए संघ पर निर्भर नहीं होते जहां तक वित्त या निर्णय लेने का प्रश्न है। इसी प्रकार से हम काम करते हैं। हमारे भाजपा के साथ बहुत मृदु संबंध हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोई पार्टी नहीं है यह न तो सरकार में है और न ही कहीं सत्ता में है। वाजपेयी, आडवाणी, अशोक सिंहल ये सभी स्वयंसेवक हैं और यह वह खुलकर कहते हैं। उनका अपना एक नैतिक बल है कभी–कभी भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सलाह लेती है। लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भाजपा को नहीं चलाता। भारतीय जनता पार्टी ही भारतीय जनता पार्टी को चलाती है। भाजपा ही भाजपा को चलाती है। वे हमसे मिलते हैं और हम कभी–कभी उनकी बैठकों में भी शामिल होते हैं। हम समझते हैं कि वह एक राष्ट्रवादी संगठन है और देश के हित में काम कर रहा है।

कुमी कपूर– आम धारणा यह है कि भाजपा द्वारा लिए जाने वाले महत्वपूर्ण निर्णयों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विचार महत्व रखता है। दो उदाहरण हैं जिन्ना विवाद के बाद आडवाणी का पद से हटना, वाजपेयी के मंत्रिमण्डल में वित्तमंत्री की नियुक्ति। आडवाणी के मामले में उन्होंने अपनी पुस्तक में कहा है–'वे चाहते थे कि मैं इस्तीफा दे दूँ'। यह उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर संदर्भ है।

मदनदास देवी– कुछ अपवाद हो सकते हैं। बस इतना ही मैं कह सकता हूँ।

सुमन के. झा– ऐसी भी धारणा है कि संघ और भाजपा के बीच में जो गतिशील संबंध हैं वे बदल गए हैं पहले भाजपा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से एक

व्यक्ति प्रभारी के रूप में रहते थे। पिछले एक वर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भाजपा के साथ बातचीत के लिए तीन नेताओं को नियुक्त किया है आप, भैय्या जी जोशी और सुरेश जी सोनी। क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के संबंधों में मूलभूत परिवर्तन आया है?

मदनदास देवी– हम तो केवल संपर्क के लिए हैं। हम उनके रोजाना की गतिविधियों के न तो प्रभारी हैं और न ही ये बताते हैं कि पार्टी में क्या होना चाहिए। जब भी उन्हें आवश्यकता महसूस हो हम उनकी सहायता करने के लिए, बढ़ावा देने के लिए और उनकी जानकारी बढ़ाने के लिए उपलब्ध रहते हैं। लेकिन कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। (संबंधों में)

वंदिता मिश्रा– चुनाव एक और महत्वपूर्ण तरीका है जिससे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय जनता पार्टी की मदद करता दिखता है ? लेकिन गुजरात विधानसभा के चुनावों के समय नरेन्द्र मोदी के चुनाव अभियान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने नरेन्द्र मोदी की सहायता नहीं की और इसके बावजूद वे जीत गए। क्या आप इस अभियान के बारे में कुछ बतायेंगे?

मदनदास देवी– यह सत्य नहीं है सामान्यतः जो कहीं भी घटता है। वह गुजरात में भी घटा, लेकिन इसकी और गहराई में न जाएं।

मनोज छिब्बर– पिछले साल मैं के. एस. सुदर्शन से मिला था। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कभी भी किसी राजनैतिक पार्टी को समर्थन दे सकती है क्या यह विचार अभी भी चल रहा है?

मदनदास देवी– अवधारणा के स्तर पर कहें तो हाँ।

डी. के सिंह– जब भी आप भाजपा से कहते हैं कि वे राम मंदिर या समान नागरिक कानून पर आपका एजेण्डा क्यों नहीं लागू कर पाए तो वे कहते हैं कि गठबंधन की राजनीति के दबाव में ऐसा करना संभव नहीं हुआ । क्या गठबंधन की राजनीति एक बाधा है?

मदनदास देवी– उन्हें गठबंधन की राजनीति के लिए न्यूनतम साझा कार्यक्रम तो तय करना ही था लेकिन समान नागरिक कानून जैसे मुद्दे पार्टी के मुद्दे नहीं हैं राष्ट्रीय मुद्दे हैं। फिर भी जब कोई पार्टी सत्ता में होती है तो वह न तो कानून तोड़ सकती है, न ही अदालत के खिलाफ जा सकती है और न ही न्यायालय के खिलाफ जा सकती है। इस सीमा में उन्हें काम करना होता है और हम ये समस्या समझते हैं।

डी.के. सिंह– क्या आप कहना चाहते हैं कि आपके एजेण्डे को लागू करने में असमर्थ होने के लिए गठबंधन की राजनीति कोई बहाना नहीं हो सकती?

मदनदास देवी– एक कारण तो होता ही है, जब आप गठबंधन बनाते हैं तो एक साझे कार्यक्रम पर अनुमति होती है और उसी के अनुसार ही कार्य भी करना होता है।

उन्नयन राजी शंकर– आर्थिक नीति या परमाणु समझौते जैसे मुद्दे पर क्या आप भाजपा के साथ हैं?

मदनदास देवी– हाँ लेकिन हम हमेशा एक ही बात रखते हैं जहां तक परमाणु संधि का प्रश्न है और किसी भी दूसरे देश के साथ समझौता करने का मुद्दा होता है तो वह सरकार का विषय रहता है। लेकिन ऐसी किसी भी संधि को भारत द्वारा भविष्य में किसी भी परमाणु परीक्षण करने की स्वतंत्रता में बाधा नहीं बनना चाहिए। केवल एक यही बात हम पूर्व शर्त के रूप में कहते हैं। जहां तक आर्थिक नीति का प्रश्न है हमारी दृष्टि में जटिल विषय है और हमें अपने हितों को विश्व व्यापार संघ के सामने अपने हितों से समझौता नहीं करना चाहिए। अन्य विषय जैसे आयात शुल्क या इंश्योरेन्स कंपनियों को खुली छूट देना कुछ ऐसे विषय हैं जिन पर चर्चा की जा सकती है।

सुमन के. झा– एक ऐसी भावना है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अभी भी अखण्ड भारत के विचार से प्रतिबंद्ध है। जब वाजपेयी पाकिस्तान गये तो वे मीनार–ए–पाकिस्तान भी गए और आडवाणी ने जिन्ना के संदर्भ में अपने वक्तव्य द्वारा यह संकेत देना चाहा कि अब हमने पाकिस्तान के विचार को स्वीकार कर लिया है। क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अभी भी पाकिस्तान के अस्तित्व के बारे में सहमत नहीं है?

मदन दास देवी– हमारे सरसंघचालक जी ने कहा है कि अखण्ड भारत केवल हिन्द से ही प्राप्त किया जाए यह जरूरी नहीं है। यदि पड़ोसी देश मित्र देश भी है हमारा और उसका मूल एक ही है तो आपकी समझदारी से भी यह उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है। अगर एक देश का विभाजन हुआ है तो वह अखण्ड भी हो सकता है। हमारी एक ही भू सांस्कृतिक पहचान है और हमारी सांझी परिवारिक परंपराएं और मूल्य हैं। हम इस संदर्भ में हमेशा इजराइल का उदाहरण देते हैं। 1800 वर्ष तक इजराइली ही इजराइल से बाहर रहे। यदि वे इजराइल में वापिस जाकर बसने की अपनी इच्छा इतने अधिक वर्षों तक जीवित रख सकते हैं तो हम क्यों नहीं रख सकते।

सुमन के. झा– क्या यही कारण है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमेशा भारत के नक्शे में हमेशा पाकिस्तान को दिखाता है

मदनदास देवी– वह भारत का सांस्कृतिक नक्शा होता है, राजनीतिक नहीं।

डी. के. सिंह– ऐसा क्यों होता है कि हर सांप्रदायिक दंगे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिन्दुओं का समर्थन करने के लिए सामने आ जाता है।

मदनदास देवी– वह इसलिए आता है कि हम हिन्दू संगठन हैं लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से कभी भी इन दंगों के लिए न तो गिरफ्तार हुआ है और न ही दोषारोपण हुआ है। किसी भी अदालत ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को किसी भी सांप्रदायिक घटना के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया है लेकिन जब हिन्दुओं पर आघात होता है तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी चोट पहुंचती है।

डी. के. सिंह– सिमी पर प्रतिबंध हटाने पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

मदनदास देवी– इस परिस्थिति में सिमी पर प्रतिबंध हटाने से आतंकवादियों को प्रोत्साहन मिला है।

त्रिवेश सिंह मैनी– आपके संगठन का नाम है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इससे लोगों को कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि यह एक सांझी भारतीय संस्कृति का संकेत देता है। परन्तु हम इस तथ्य को क्यों नहीं स्वीकार करते हुए रह सकते कि प्रत्येक भारतीय एक पृथक पहचान रखते हुए भी भारतीय हो सकता है।

मदनदास देवी– बहुआयामी संस्कृति अनेकता, विविधता और सहिष्णुता भारत का विशिष्ट इसीलिए है क्योंकि भारत हिन्दू है हम सेकुलर इसलिए हैं कि हम हिन्दू हैं। हमारी उदारता का कारण यह है कि हम हिन्दू हैं भारत सांप्रदायिक आधार पर विभक्त किया गया था। इसके बाद भी शेष भारत सेकुलर रहा। इसे सेकुलर किसने रखा हम भारतीयों ने , हम हिन्दुओं ने।

त्रिवेश सिंह मैनी– और समान नागरिक संहिता के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

मदन दास देवी– सभी इस पर सहमत हैं। शाहबानो मामले तक कम्युनिस्ट भी इस पर सहमत थे। उस मामले के बाद हरेक ने अपना राजनैतिक रुख बदल लिया। विवाह के लिए तो सबके लिए नियम एक ही होने चाहिए।

रुचिका तलवार– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अखण्ड भारत के विचार का कैसे समर्थन कर सकता है और हरेक को इस बात के लिए कैसे विवश कर सकता है कि वह हिन्दू है। वह हिन्दू नहीं भी हो फिर भी भारतीय हो सकता है।

मदन दास देवी– इंडियन, भारतीय और हिन्दू इन सबका एक ही अर्थ है। हम सब अपनी इच्छा से आस्था पद्धति चुनने में स्वतंत्र हैं यही भारतीय संस्कृति है।

चित्रा पॉल– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का हमेशा वामपंथियों के साथ असुविधाजनक संबंध रहा है, खासकर केरल जैसे प्रांतों में।

मदनदास देवी– नहीं हमेशा ऐसा नहीं है हम लोग दो बार सरकारों में भी एक साथ रहे हैं 1967 और 1989 में हम एकदलीय व्यवस्था में विश्वास नहीं रखते । हम बहुदलीय व्यवस्था को मानते हैं। जब राजनीति विद्वेषपूर्ण होती है तब परेशानी पैदा होती है। हमारे लिए सब हमारे अपने हैं कोई भी हमारा शत्रु नहीं है।

रवीश तिवारी– क्या मायावती और बहुजन समाज पार्टी जो कि कार्यकर्ता आधारित पार्टी है हिन्दू एकता की दिशा में एक भारी बाधा है?

मदनदास देवी – प्रत्येक राजनैतिक पार्टी जो सत्ता में आना चाहती है उसे समाज के सभी वर्गों को अपने साथ लेकर चलना होता है। एक बार मायावती केवल दलितों या बहुजन समाज के लिए ही बात करती थी। अब वे सर्वजन समाज और सभी को समावेश करते हुए चलने की बात करती हैं । राजनीति कहीं से भी प्रारंभ की जा सकती है लेकिन वस्तुतः सभी वर्गों को आपको अपने साथ लेकर चलना पड़ता है।

रवीश तिवारी– क्या आप मानते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सर्वजन समाज वाला विचार असफल हो गया है, भाजपा असफल हो गई है और मायावती को सफलता मिली है।

मदनदास देवी– राजनीति जो है वह आरोह और अवरोह का खेल है। (seesaw)

शेखर गुप्ता– आप तो उत्तर प्रदेश में पूरी तरह से समाप्त कर दिए गए हैं?

मदनदास देवी– राजनीति में ऐसा होता ही है पहले कोई जीतता है और फिर हारता है।

शेखर गुप्ता– क्या आप यह मानते हैं कि आपके लिए यह खेल सफल नहीं रहा है?

मदनदास देवी– इस खेल के अनेक आयाम होते हैं । एक नेतृत्व का है और दूसरा है जनता की आवश्यकता का । उत्तर प्रदेश में लोग मुलायम सिंह के विरुद्ध तीव्रता से लड़ना चाहते थे। वैकल्पिक जननेता के रूप में मायावती उभरीं, लोगों ने एक मजबूत विकल्प चुनना चाहा जो मायावती ने प्रदान किया।

शेखर गुप्ता– यह कहा जाता है कि भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पिछड़े वर्गों के विरुद्ध भेदभाव करते हैं ?

मदनदास देवी– हम सामाजिक विषमता के प्रश्न को सुलझाने के लिए काफी गहनता से कार्य कर रहे हैं। पर यह कोई आसान काम नहीं है। हमने अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किए, उदाहरण के लिए झुग्गी झोपड़ी बस्तियों में रहने वाली कन्याओं का विजयदशमी पर पूजन हुआ। चेन्नई में विभिन्न पंथों के 400 साधु दलितों की बस्ती में गए और उनके साथ भोजन किया।

शेखर गुप्ता– कर्नाटक के गोंडा वर्ग ने पुजारियों के क्षेत्र में ब्राह्मणों के एकाधिकार को चुनौती दी है। क्या आप इसका समर्थन करते हैं ?

मदनदास देवी– तमिलनाडु में हमने उन गैर ब्राह्मणों को पुजारी के रूप में प्रशिक्षित करना प्रारंभ करना शुरू किया है। जो हिन्दू पूजा पद्धति सीखना चाहते हैं।

सुमन झा– लोगों को लगता है कि बाबा रामदेव शिष्य श्री रवीशंकर आदि उस जन समाज के स्थान को अब ले रहे हैं जो पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रभाव में था।

मदनदास देवी– वे सभी हमारे समर्थक हैं। हर व्यक्ति जो सज्जन प्रवृत्ति का है हमारे साथ सहयोगी भाव से समर्थन करता है।

रुचिका तलवार– और वे जो आपका समर्थन नहीं करते क्या वे अच्छे लोग नहीं है?

मदन दास देवी– जो हमारे साथ आज नहीं हैं। वे कल हमारे साथ होंगे ऐसा हमारा विश्वास है।